कथा सरिता

हर शुरूआत स्वयं से करें

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व.लाल बहादुर शास्त्री दो बातें अक्सर कहा करते थे। एक, हम यह न सोचें कि देश हमें क्या दे सकता है? हम यह सोचें कि हम देश को क्या दे सकते हैं। दूसरी यह कि शिखर का बुर्ज बनने के स्थान पर नींव का पत्थर बनने की कोशिश कीजिए। उनके खुद के परिवार ने भी शास्त्री जी के इन जीवन मंत्रों को आत्मसात करके ही अपने जीवन की राह बनाई।

दरअसल शास्त्री जी के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वे दूसरे से जो कुछ अपेक्षा करते थे, उस पर स्वयं पहले अमल करते थे। पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान बाबूजी ने जब देश से सप्ताह में एक दिन सोमवार को एक समय का भोजन न करने की अपील की तो सबसे पहले सोमवार की शाम का भोजन उनके अपने घर में बंद हुआ। इसी तरह जब उन्होंने देश की महिलाओं से सैन्य जरूरतों के लिए अपने-अपने आभूषण देने की अपील की, तो सबसे पहले उनकी पत्नी और बहुओं के आभूषण इस पुनीत काम में उपयोग में आए थे। यह थी उनके जीवन की शैली। आज आप नजर उठाकर देखिए,क्या आपको हीं दूर-दूर तक भी कोई ऐसा नेता दिखता है जो इस तरह का आचरण कर सके?

ताशकंद की यात्रा पर रवाना होने से पहले एक पत्रकार ने सवाल किया था कि शास्त्रीजी,आप कद मे इतने छोटे हैं और अयूब खान इतने लंबे,आप ताशकंद में उनसे कैसे बात करेंगे? शास्त्रीजी ने इस चुटीले सवाल का उत्तर दिया था - मैं सिर उठाकर बात करूंगा और अयूब सिर झुकाकर। यह था उस महान आत्मा का आत्मविश्वास। इसी आत्मविश्वास के चलते न केवल उन्होंने देश की सेना का मनोबल बढ़ाया,बल्कि देश में श्वेत क्रांति और हरित क्रांति के बीज भी बोए। यह उनका आत्मबल ही था कि पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान उनकी आवाज समूचे देश के लिए एक सुरक्षा कवच के रूप में काम करती थी। समाज के अंतिम व्यक्ति की चिंता उनके जेहन में हमेशा रही। तभी इस देश ने भी उन्हें बेहद प्यार, सम्मान और अपनापन दिया।

महत्व संगठन का

ऋषि अंगिरा के शिष्यों में एक था उदयन। वह काफी प्रतिभाशाली था। पर उसमें विनम्रता की कमी थी। वह हर समय अपने गुणों का बखान करता और अपने सहपाठियों का मजाक उड़ाता रहता था। ऋषि ने सोचा कि समय रहते इसे न समझाया गया तो यह लक्ष्य से भटक जाएगा। ऋषि उपयुक्त अवसर की प्रतिक्षा करने लगे एक बार सर्दी की रात में सत्संग चल रहा था। बीच में अंगीठी में कोयले दहक रहे थे। एक तरफ ऋषि बैठे थे दूसरी तरफ शिष्य। ऋषि बोले- अंगीठी खूब चमक रही है। इसका श्रेय इसमें दहक रहे है।' सभी ने सहमति में सिर हिलाया। ऋषि ने उदयन से कहा - देखो वह सबसे बड़ा कोयला सबसे तेजस्वी है। इसे निकाल कर मेरे पास रख दो। उदयन ने चिमटे से पकड़ कर वह तेज भरा अंगारा ऋषि के पास रख दिया।

लेकिन जैसे ही वह अंगीठी के अन्य कोयलों से अलग हुआ जल्दी ही उसकी चमक फीकी पड़ने लगी। उस पर राख की परतें आ गई और वह तेजस्वी अंगारा एक काला कोयला भर रह गया। ऋषि ने समझाया - तुम चाहे कितने भी तेजस्वी हो पर इस कोयले जैसी भूल मत कर बैठना। अगर यह कोयला अंगीठी में सबके साथ रहता तो अंत तक तेजस्वी बना रहता और सबको गर्मी देता रहता। संगठन से अलग होते ही इसकी चमक नहीं रही। अब हम इसकी तेजस्विता का लाभ भी नहीं उठा सकेंगे।

परिवार ही वह अंगीठी है जिसमें प्रतिभाएं संयुक्त रूप से तपती हैं। व्यक्तिगत प्रतिभा का अहंकार न टिकता है न फलित होता है। सबके साथ रहने में ही वास्तविक बल है। उदयन को अपनी भूल का अहसास हो गया। उसने महसूस किया कि हर एक बहुत कीमती है।

धैर्य व मेहनत

काम करते-करते ऊर्जा का क्षय होना स्वाभाविक है पर इसे थकान न मानें। शक्ति दोबारा लौट आएगी।

हेनरी फोर्ड सोलह वर्ष की उम्र में डेट्राइट एडीसन कंपनी में मैकेनिक की नौकरी करने लगे। कड़ी मेहनत व लगन से काम करते हुए चीफ इंजीनियर के पद तक पहुंच गए। एक बार उन्हें महान अविष्कारक एडीसन से बात करने का मौका मिला, तो उसने पूछा कि क्या मोटर कारों के लिए पेट्रोल ईंधन का अच्छा सा स्रोत हो सकता है? एडीसन ने सिर्फ 'हां' कहा और चल दिए। इस संक्षिप्त जवाब ने फोर्ड ने ग्यारह साल बाद टिन लिजी नामक कार बनाई। वे ग्यारह वर्षों तक अलोचनाओं के बीच अपने काम में भिड़े रहे। मनुष्य के लिए मुश्किल समय में इंतजार करने, काम करने,जुटे रहने और धैर्य रखने से ज्यादा कठिन शायद कुछ भी नहीं है। अक्सर किसी सवाल के जवाब में कहे गए कोई अनपेक्षित या अप्रत्याशित वाक्य अथवा संक्षिप्त जवाब से एक नए भावनात्मक सूर्य का जन्म हो सकता है।

यह बेहद महत्वपूर्ण है कि हम आशा बनाए रखें और कभी ऊर्जा की कमी को थकान के नाम से न पुकारें। अगर हम कोशिश करना छोड़ देंगे, तो बाद में हम पीछे देखेंगे और कहेंगे, 'मुझे अब एहसास होता है कि वह सिर्फ एक दौर था, मुश्किल समय था, सिर्फ स्वाभाविक संक्रमण काल था, जिससे मैं गुजर रहा था। मुझे हार नहीं माननी चाहिए थी। मुझे इससे संघर्ष करना चाहिए था। हर संस्था,हर व्यक्ति तथा हर नौकरी के युग, कालखंड या दौर होते हैं। जब समस्या सिर्फ ऊर्जा की कमी हो और थकान न हो, तो शक्ति दुबारा लौट आएगी। जब भावनात्मक रूप से तंत्र पर अधिक दबाव हो, तो हमें विश्राम करना चाहिए, इंतजार करना चाहिए,क्योंकि यह तय है कि नई सुबह जरूर आएगी।

सही नजर

एक बेरोजगार युवक ने किसी बड़ी कंपनी में सर्विस के लिए आवेदन किया। साक्षात्कार लेने वाले अधिकारी ने उसे नवयुवक को उस पद के योग्य पाया। अधिकारी ने कहा - तुम अपना ई-मेल पता दो, मैं ज्वाइनिंग की तारीख तुम्हें मेल द्वारा सूचित कर दूंगा। नवयुवक ने कहा - महोदय, मेरे पास न कम्प्यूटर है और न ही ई-मेल एड्रेस। अधिकारी ने आश्चर्य जताते हुए कहा - आज जिसका ई-मेल एड्रेस नहीं है, उसकी कोई पहचान नहीं। मुझे खेद है कि एक पहचानहीन व्यक्ति के लिए कंपनी में कोई जगह नहीं। नवयुवक निराश हुआ। उसके पास मात्र दस डालर थे। कुछ विचार कर वह सुपर बाजार गया और वहां से कुछ सब्जियां खरीद घर-घर जाकर बेची। दिन भर में यही कार्य उसने तीन बार किया और रात को वह कुल साठ डॉलर लेकर घर लौटा। दूसरे दिन से वह दोगुने उत्साह से इस कार्य में लग गया। कुछ वर्षों मे उसके पास डिलीवरी वाहनों का एक बेड़ा था। पांच साल के भीतर ही वह अमेरिका के सबसे बड़े फूड रिटेलरों की गिनती में आ गया। एक दिन उसने अपने परिवार के लिए इंश्योरेंस पॉलिसी खरीदने के लिए एक एजेंट को बुलाया। एजेंट के साथ सारी बतचीत हुई। उसने ई-मेल एड्रेस मांगा। युवक ने कहा - मेरे पास कोई ई-मेल एड्रेस नहीं है। एजेंट को आश्चर्य हुआ। वह बोला - आपके पास ई-मेल एड्रेस नहीं और आपने इतना बड़ा व्यवसाय खड़ा कर लिया! क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि आपके पास ई-मेल एड्रेस होता, तो आप क्या होते? युवक ने जवाब दिया - ऑफिस क्लर्क।

कई बार हम सफलता को किन्हीं निश्चित सुविधाओं या परिस्थितियों के दायरे से देखने की आदत बना लेते हैं। सफलता और हमारे बीच की वास्तविक दूरी यह हमारी दृष्टि ही होती है। यदि हम हर समस्या को नवीनता से देखें तो हर जगह अवसर हैं।

कामठी। 'खुशनुमा जीवन जीने की कला' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. फाल्गुनी, उपसभापति विमलताई साबके, वैशाली चोपड़े, शैलजा तायवाड़े, हेमलता जुनघरे, शोभा मोटघरे, ब्र.कु. प्रेमलता।

कल्याण। सेल्फ मेनेजमेंट लीडरशिप कोर्स कराते हुए ब्र.कु. सुनिता। साथ में एसेल पेकेजिंग मेनेजर स्टाफ।

लातेहार-गुमला। झारखंड स्थापना दिवस कार्यक्रम में जिला उपायुक्त आराधना पटनायक को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. रजनी।

नागौर-राजस्थान। पूर्व पर्यटक मंत्री उषा पुनिया जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. अनिता एवं मंजु।

नवाशहर-पंजाब। अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर अमरजीत पाल को आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कान्ता। साथ में एस.डी.एम.डी.टी.ओ. जे.एस. बराबर तथा अन्य

वाशी नवी मुंबई। डॉ. विश्वासनंद स्वामी, जी.बी. रामलिंगया चेयर डिवाइन लाईफ फाउण्डेशन को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. शीला।